अध्याय - ८

मॉरीशस म पत्रकारिता

मॉरीशस द्वीप म हिंदी पत्रकारिता का कहानी भारतीय जन जागरण का कहानी है| १५ माच सन १९०९ म डा.मणिलाल मगनलाल डाक्टर द्वारा संपादित 'हिन्दुस्तानी' पत्र भी तत्कालीन राजनीतिक आथिक एवं सामाजिक दुरवस्था से मुक्ति प्राप्त करने के संघष से जुड़ा हआ है| मॉरीशस म पत्रकारिता से ही हिंदी का विकास हआ है. श्री प्रहलाद रामशरण का कहना है- "मॉरीशस का हिंदी पत्र पत्रिकाओं का उद्भव और विकास धामिक नवजागरण से हआ है."(1) (श्री प्रहलाद रामशरण: मॉरीशस: पृ :८८) मॉरीशस म हिंदी भाषा के प्रगतिगामी स्वरूप और विकास के विभिन्न आयामों को समझने के लिए आवश्यक है को मॉरीशस को हिंदी पत्रकारिता पर एक द्रष्टि डालनी होगी. वहां पर सन१७७३ से सन १९५४ के बीच मॉरीशस से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं को संख्या ६०६ जीतनी बताई है. जिनम भारतीय भाषाओं म प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं म कुल संख्या २३ है. के हजारी सिंह को पुस्तक

एक लम्बे समय तक वहां के भारतीयों ने अंधकार ही उनको नियति है यह मान लिया था| जब उन लोगों को सन १८३४ म बंधुआ मजदूरों के रूप म लाया गया तब से दयाजनक परिस्थिति दयनीय थी| वे शोषित थे, आथिक रूप से भी गरीब थी| ऐसी स्थिति म पत्रकारिता ही डूबती नैया को पार लगाने का रास्ता था|

- **<u>मॉरीशस म हिंदी को प्रथम पत्रिका-</u>**

सन १९०९ म मणिलाल डॉक्टर के प्रयास से "हिन्दुस्तानी" का प्रकाशन हआ. "हिंदुस्तानी" पत्रिका का प्रथम अंक १५ माच, १९०९ को अंग्रेजी और गुजराती भाषा म प्रकाशित हआ. बाद म हिंदी म भी प्रकाशित हआ. इस पत्रिका का हिंदी म केवल २ माच,१९१३ का एक अंक मॉरीशस आकाइब्स म सुरक्षित है. "गणेशी" के नाम से "होली" कविता का प्रकाशन हआ, उसी अंक म अज्ञात लेखक का गध म "सत्य होली" लेख प्रकाशित हआ है.

मॉरीशस म हिंदी के अतिरिक्त पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हआ था. इस सन्दभ म श्री प्रहलाद रामशरण का मत है- "यहाँ का प्रथम समाचार पत्र सन १७७३ म "पंचित ऑफ़िस" नाम से फ्रेंच भाषा म प्रकाशित हआ था. सन १७७३ से १९५४ के बीच मॉरीशस म प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं को संख्या ६०६ बताई गयी है. इसम भारतीय भाषाओँ म प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं को संख्या 23 बताई गई है, जिनमे हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को संख्या १७ बताई गई है, तमिल को ३, गुजराती को २, उदू को एक, गुजराती और उदू भाषाओँ का प्रयोग १९०६ के पत्रों से हआ, किन्तु अभी यह बताना संभव नहीं है कि हिंदी भाषा का प्रयोग मॉरीशस म किस साल से शुरू किया गया था."(२) (वही :पृ:८६)

"हिन्दुस्तानी" से पूव "मॉरीशस आय पत्रिका" (१९११) म प्रकाशित हई और "ओरिएण्टल गजट" (१९१२) पत्रिकाएँ भी हिंदी और अंग्रेजी म प्रकाशित हई थी. लेकिन इन पत्रिकाओं को प्रति अभी कहीं उपलब्ध नहीं है.

मॉरीशस म पत्रिकाओं को काल के अनुसार विभाजित किया जाय तो इस प्रकार विभाजित किया जाता है.

(1) प्रारंभिक काल-१९०९- १९३५ तक

(२) मध्यकाल १९३५-१९६० तक

(३) उत्तर मध्यकाल १९६०-१९६८

(४)आधुनिक काल १९६८-अब तक

1. प्रारंभिक युग की पत्र पत्रिकाएँ -१९०९ से १९३५ तक

"हिन्दुस्तानी" पत्र१९०९ से १९१३ तक प्रकाशित हई है. पं.आत्माराम विश्वनाथ, पं.राम अवध शमा आदि कि विद्वता के लाभ पत्रिका को मिला. मणिलाल डॉक्टर के संपादन म पहले साप्ताहिक और बाद म दैनिक प्रकाशन हआ. अंग्रेजी, गुजराती म प्रारंभिक पत्रिका निकाली बाद म हिंदी म भी प्रकाशित की गई. इसकी १५ माच १९०९ तथा २ माच १९१३ की ही प्रतियाँ मॉरीशस आकाइब्स म उपलब्ध है.

- **"मॉरीशस आय पत्रिका"-**

महाभारत म जैसे कौरव और पांडवों अपने इस युद्ध म श्रीकृष्ण को आगे कर दिया था वैसे ही गिरमिटिया मजदूरों के पास अपने दुःख दद को महसूस करने वाले पीड़ितों का पक्षधर उनकी कलम है. भारत से बाहर दूसरे देशों की तुलना म शायद मॉरीशस ही एक ऐसा देश है जहाँ अधिक मात्रा म पत्रिकाएँ प्रकाशित हई है. अब परिस्थितियाँ ऐसी है कि अंग्रेजी की पत्रिकाएँ उपलब्ध है लेकिन 'हिंदुस्तानी', ' मॉरिशस आय पत्रिका', और ओरिएंटल गजल की प्रतियां ग़ायब है हिंदुस्तानी पत्र के केवल 2 अंक उपलब्ध है. एक पूरा और दूसरा अधूरा. मॉरीशस म सन 1911 म प्रकाशित पत्रिका का एक भी अंक आज मौजूद नहीं है उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाया है. इसका सत्यापन पंडित आत्माराम विश्वनाथ द्वारा रचित ' मर मॉरीशस का इतिहास' के पृष्ठ नबर 176 विद्यमान है जबकि रामधन पूरण द्वारा रचित आर्य समाज का इतिहास म भी इसके प्रमाण मिलते ह हिदुस्तानी प्रेस से मुद्रित और प्रकाशित होता था. श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ द्वारा 'आय समाज और हिंदी विश्व संदभ म' पुस्तक के पृष्ठ नंबर 200 म इस बात का उल्लेख भी मिलता है की श्री खेमलाल उस समय अस्वस्थ थे जिसके वजह से स्वामी स्वतंत्रानंद ने मॉरिशस आय पत्रिका का संपादन कार्य सपन्न किया था हालांकि इस बात म भी विवाद है.

मॉरीशस म इसके बाद "मॉरीशस आय पत्रिका" का (पाक्षिक) प्रकाशन हआ. जून १९११ से १९३३ तक प्रकाशन हआ. इसके संपादक खेमलाल लाला थे. इस पत्रिका का केवल एक लक्ष्य वैदिक धम प्रचार एवं अशिक्षा को दूर करने का जागरण–अभियान इस पत्रिका का लक्ष्य होता था. हिंदी और अंग्रेजी म प्रकाशित होती थी. ओरिएण्टल गजट (१९१२) हिंदी और अंग्रेजी म प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक पत्र था. सनातन धम के लोगों का पत्र था. ये सभी पत्रिका ज्यादा समय तक नहीं चली, लेकिन २० वी सदी के दूसरे दशक के अंत जब राजनीति और सामाजिक परिवतन के कारण पत्रिकाएँ दुबारा प्रकाशित होने लगी. 'मॉरीशस इन्डियन टाइम्स' का प्रकाशन १९२० हआ. संपादक के.द्वारका थे १९२४ म पत्रिका बंद हो गई. हिंदी अंग्रेजी और फ्रेंच म निकालता था.

आय समाज का मंतव्य था- "मानव को सवागीण उन्नति के लिए विधा अपरिहाय है|" आय समाज का छठा नियम यह था कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अथात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना" 'मॉरीशस मित्र' नामक पत्रिका का प्रकाशन सनातन धमिर्यो ने किया उसका मूल उद्देश्य राजनीतिक और सामाजिक उत्थान के लिए किया गया. उसके संपादक पं.राम अवध शमा थे. १९३२ तक इस पत्रिका का प्रकाशन हआ.

'मॉरीशस आय पत्रिका' १९१३ म बंद हई, उसका फिर से १९२४ से आरम्भ हआ. पं.काशीराम किश्तो ने इसका संपादन किया जो १९४० तक उसका पत्रिका का प्रकाशन हआ.

'**आयवीर जागृति**' – ३,मई १९२९ से आयवीर का प्रकाशन हिंदी तथा अंग्रेजी म होने लगा.४ पृष्ठों वाला यह पत्र साप्ताहिक था और श्री इसरापेन मुच्चे इसके मालिक थे.२२ फोकवोर स्ट्रीट, पोट मुईस म मुद्रित तथा प्रकाशित होता था. सूत्र था – "सत्यमेव जयते नानुतम' इस पत्रिका का मूल उद्देश्य था – "जिससे देश धम को रक्षा हो. उत्तम शिक्षा का अत्यन्ताभाव है जिसके कारण जाति उसको तरह है, जो कि एक दुगम पवत के ऊँचे शिखर पर चढ़ना चाहता है. और स्त्री शिक्षा का प्रचार करना हमारा उद्देश्य है. सामाजिक सुधार आदि.

भारतीय नवजागरण हेतु जागृति का प्रकाशन १९३९ म प्रारम्भ हआ. राष्ट्रीय पुस्तकालय म शुक्रवार १७ जनवरी १९४० का अंक विधमान है. पं.नारायण संजीवी जो मूल तमिल के थे वह सम्पादक थे. उसका मूल वाक्य था- उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान निवोधत' अथात – "उठो जागो और उन्नत राह बतानेवालों को पहचानो. जागृति ने उस समय तत्काल हिंदी समाज म घर कर गई संकोण मानसिकता को दूर भागकर उसे व्यापक द्रष्टि प्रदान करने का प्रयास किया है. सन १९४५ से आयवीर और जागृति मिलकर 'आयवीर –जागृति' नाम से प्रकाशित होने लगे.

'आयवीर' आय पत्रिका से अलग होकर ३ साल के बाद पं.काशीराम किश्तोने पुन: कायभार संभाला.

'**सनातन धमाक**' इस पत्रिका का आरम्भ १५ दिसंबर १९३३से प्रारंभ हआ. इसके संपादक श्री नृसिंह दास थे. हिंदी, अंग्रेजी और फच म साप्ताहिक रूप से प्रकाशित होने लगा. इसी पत्रिका म पहली कहानी "इन्दो"(१९३३) प्रकाशित हई.१९४२ म बंद हो गई.

इस प्रकार मॉरीशस म आरंभिक पत्र पत्रिकाओं का जन्म हआ. उन पत्रिकाओं का केवल एक ही लक्ष्य था. भारतवंशी यों को जागरूक करना. इस काल को पत्रिकाओं ने हिंदी को प्रोत्साहित किया.

२.मध्यकाल को पत्र पत्रिकाएँ (१९३५-१९६८)

मॉरीशस म पत्रकारिता का एक नया मोड़ १९३५ से आया. जिस समय मॉरीशस का शताब्दी समारोह मनाया गया. उस वक्त पं.लक्ष्मीनारायण चतुवदी को शताब्दी सरोज नामक पुस्तक प्रकाशित किया. 'हिंदी प्रचारिणी सभा' को स्थापना और 'दुगा' का प्रकाशन 'वसंत' का जन्म हआ. इसी आरंभिक युग म मासिक चिट्ठी, जागृति, जनता, जमाना, अनुराग, नवजीवन, कांग्रेस आदि. मध्यकाल म सन १९३५ से सन १९६८ तक पत्रकारिता को यात्रा को विकास को द्रष्टि से इसे दो हिस्सों म विभाजन किया जाता है.

पूव मध्यकाल को पत्र पत्रिकाएँ (१९३५-१९६८)

मॉरीशस म सवप्रथम 'वसंत' पत्रिका का प्रकाशन हआ. उस वक्त पं.उमाशंकर गिरजानंद ने पत्रिका का संपादन किया. उस वक्त केवल एक ही अंक प्रकाशित हआ.

"दुगा" हस्तलिखित मासिक पत्रिका का प्रकाशन १९३५,३६ और १९३७ म हआ.अंग्रेजों का दबाव था इसलिए मॉरीशस म चुपके से निकली गई और एक व्यक्ति पढ़ कर दूसरे को पढ़ने के लिए देता था. हिंदी के लिए संघष का एक उदाहरण है ये दुगा.

'जागृति'-यह पत्रिका साप्ताहिक पत्र था.जिसका अक्तूबर सन १९३९ म प्रकाशन शुरू हआ. स्वातंत्र्य प्राप्ति एवं सामाजिक राजनीतिक चेतना के लिए महत्वपूण योगदान दिया.

'एडवांस' सन १९४० म राजनीतिक जन जागरण हेतु प्रकाशन हआ, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा म प्रकाशित हआ.

'मासिक चिट्ठी' – सन १९४२-१९५० तक प्रकाशित हई. सरकार के जनसंपक कायालय द्वारा निकलनेवाली साप्ताहिक पत्रिका थी.

'आयवीर जागृति' –आयवीर और जागृति ये दोनों ही आय समाज के पत्र थे.और बाद म दोनों एक ही नाम से प्रकाशित होने लगे. सन १९४५-१९५० तक प्रकाशन हआ.

'सैनिक' –सन १९४६-१९४७ तक प्रकाशित हआ. श्री बख्तावर ने संपादन दिया.

'जनता'- इस पत्रिका का संपादक श्री जयनारायण राय के द्वारा ४ मई १९४८ को प्रकाशित हई.

'जमाना'-१८ जून १९४८ को प्रकाशित हई इस पत्रिका का संपादक श्री मुनेश्वर कुराराम तथा संस्थापक पं.वासुदेव विष्णुदयाल थे. अंग्रेजी,हिंदी और फ्रेंच भाषा म प्रकाशित हआ.

'आर्यादय'-

'आर्यादय' आयसभा मॉरीशस का मुख पत्र है.प्रथम अंक ८ नवंबर १९५० को प्रकाशित हआ था. प्रारंभ म इसका संपादन काय पंडित आत्माराम विश्वनाथ संभालते थे. सन २००० से आर्यादय पत्र का संपादन कर रहे ह.

सन १९५० म **आयवीर** –जागृति का स्थान आर्यादय ने लिया. सन १९५० म स्वामी स्वतंत्रता नन्द एवं मणिलाल डाक्टर मॉरीशस म भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह म भाग लेने आए .

'वतमान'

'मजदूर'-

- **उत्तर मध्यकाल को पत्र-पत्रिकाएँ-(१९६०-१९६८)**

इस युग को प्रमुख पत्रिकाओंम अनुराग, नवजीवन,समाजवाद, कांग्रेस,बालसखा,

इस प्रकार विभिन्न पत्रिका ओं म विभिन्न विषयों को लेकर लिखा गया.

आधुनिक काल की पत्रिकाएँ –(१९६८-अब तक)

'अनुराग' १९६९से १९७७ तक साहित्यिक पत्रिका अनुराग के 23 अंक प्रकाशित हए. सन १०६० म अनुराग नामक प्रथम

दपण १९७३-१९७५ तक इस पत्रिका का प्रकाशन हआ और उसके श्री छविलाल विदेशी थे. नवोदित लेखकों की रचनाएं प्रकाशित होती थी.

आभा १९७२-१९७६ श्री महेश रामजियावन उसके सम्पादक थे.

हमारा देश-विष्णु दत्त मधु के द्वारा संपादन हआ.

निमाण पत्रिका के संपादक श्री रामदेव धूरंधर थे.

विश्व दपण' –श्री बलवंत सिंह नौबत सिंह थे.

'वसंत' माच सन १९७८ से वसंत पत्रिका का प्रकाशन महात्मा गाँधी संस्थान से प्रकाशित हो रही है. इसके संपादक श्री अभिमन्यु अनत है और सहयोगी श्री रामदेव धुरंधर और पुजानंद नेमा है. इस पत्रिका म नाटक,एकांकी, उपन्यास, कहानी,बाल साहित्य,भटवाता और विभिन्न लेख प्रकाशित होते रहे.

'स्वदेश'- इस पत्रिका का प्रकाशन सन १९८६ से हआ है.

'इंद्र धनुष'- सन १९८८ से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हआ. इसके संपादक श्री प्रहलाद रामशरण है.शोध लेख

'आक्रोश' पत्रिका का प्रकाशन अभी हो रहा है जिसके संपादक सत्यदेव टगर है जो आज की युवा पीढ़ी को हिंदी का पाठ भी सिखा रहे ह.

" मॉरीशस म सन १९७० से २००० तक ३० साल म अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हआ. इन पत्र पत्रिकाओं म कुछ तो प्रारम्भिक वर्षों म ही बंद हो गई किन्तु कुछ पत्रिकाएँ आज भी प्रकाशित हो रही ह. इन म प्रमुख ह- दपण (१९७१-७९),आभा (१९७२ -७६),हमार देश (१९७१-७४),निमाण (१९७५), विश्व दपण (१९७८),वसंत (१९७६ से निरंतर प्रकाशित),भारतीय समाचार (१९७२),प्रभात (१९७६ -७९),प्रकाश (१९७४),परिवतन (१९७७ -७९),त्रिवेणी (१९७४),स्वदेश (१९८७-९१),इंद्रधनुष (अक्तूबर १९८८ से निरंतर प्रकाशित),आक्रोश (१९९० से निरंतर प्रकाशित), मुक्ता (१९९० -९२),भारत दशन (१९८९ -९१), पंकज (दिसंबर

१९७१) से निरंतर प्रकाशित),रिमझिम (१९९४ से निरंतर प्रकाशित), भारत दशन (१९७९ -९१),जनवाणी (२००१) आदि.(४) (गगनांचल :दसवां विश्व हिंदी सम्मलेन विशेषांक :जुलाई –अक्तूबर २०१५:पृ:५९)

हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना पत्र हिंदी भवन सन्देश भी प्रति

-: संदभ सूची -:

(1) मॉरीशस : श्री प्रहलाद रामशरण पृ :८८

(२) मॉरीशस : श्री प्रहलाद रामशरण वही :पृ:८६

(४) गगनांचल :दसवां विश्व हिंदी सम्मलेन विशेषांक :जुलाई –अक्तूबर

२०१५:पृ:५९